द्वितीय अध्याय

नीरजा माधव का व्यकितत्व एवं कृतित्व

2.1 नीरजा माधव का व्यक्तित्व

समकालीन हिंदी साहित्य में नीरजा माधव का चर्चित हुआ प्रतिष्ठित नाम है । उन्होंने अपनी रचनाओं में मानवीय चेतना, नारी चेतना व समाज में शोषित वर्ग के पक्ष में अपनी आवाज मर्यादित तरीके से बुलंद करने के लिए प्रसिद्ध हैं अपने समय और परंपरा के तमाम रोड त्रस्त बंधनों से मुक्त होकर उन्मुक्त बौद्धिक विकास का दुर्लभ संयोग उनको प्राप्त है निरजाजी की रचनाओं में मानवीय पीड़ा अनछुए विषय व्यक्ति की स्वतंत्रता उनकी रचनाओं का विषय रहा है ।

"हर साहित्यकार सृजन करते समय उन समसामयिक परिस्थितियों का जैसे कि सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक और राजनीतिक आदि का चित्रण किए बिना साहित्य सृजन नहीं कर सकता । अतः उस साहित्यकार का संपूर्ण प्रभाव उनके साहित्य पर दिखाई देता है किसी भी लेखक का साहित्य उसके विचारों एवं भावनाओं का दर्पण होता है । इसलिए किसी भी साहित्यकार की कृत को समझने से पहले उसके जीवन की घटनाओं को जानना आवश्यक है ।"[1]

2.1.1 जन्म

प्रगतिवादी रचनाकार नीरजा माधव का जन्म 15 मार्च 1962 में ग्राम कोतवालपुर, पोस्ट मुक्तीगंज जिला जौनपुर में हुआ था । नीरजा जी के पिताजी मथुरा प्रसाद अपने समय के एम. ए. उपाधि धारक थे । पिताजी पेशे से एक सरकारी विद्यालय में हिंदी अध्यापक थे । नीरजा जी की मां श्रीमती विमला देवी जो एक कुशल गृहिणी थी।

मथुरा प्रसाद जी का नीरजा से (जिनका घर का नाम बेबी था) विशेष लगाव था । इसके कारण वे बेबी से तरह-तरह की ज्ञान की बातें करते थे और उसे पढ़ाने के लिए तरह- तरह के तरीकों का भी इस्तेमाल करते थे। मथुरा प्रसाद जी की रुचि साहित्य में भी थी। विज्ञान व साहित्य से संबंधित पुस्तक लाते थे, अध्ययन करते थे, और लेखिकाओं के साहित्य का भी अध्ययन करने को कहते थे।

'जिस परिवार में नीरजा माधव का जन्म हुआ। वह संयुक्त परिवार था । नीरजा जी के मध्यवर्गीय परिवार के सारे सदस्य शिक्षित होने के कारण आरंभ से ही शैक्षिक माहौल और अच्छे संस्कार मिल गए, जिसके फलस्वरूप यही नीरजा बड़ी होकर डॉ. नीरजा माधव के रूप में हिंदी की ख्यातकीर्ति साहित्यकार बनी।"[2]

नीरजा जी की प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा तीन तक) घर परिवार में पिताजी की देखरेख में ही संपन्न हुई क्योंकि नीरजा जी की छोटी बहन रानी की असमयिक मृत्यु के कारण घर परिवार वाले नीरजा माधव को लेकर विशेष सावधानी रखने लगे ।उनकी मां और दादी के मन में एक डर सा रहने लगा कि कहीं बेटी बेबी को कुछ हो ना जाए । लेखिका बचपन से ही प्रतिभाशाली व पढ़ाई में तेज हुआ करती थी । गांव के ही सरकारी विद्यालय में चौथी कक्षा में उनको प्रवेश दिलाया गया और पढ़ाई में अच्छे होने पर अध्यापकों द्वारा कक्षा का मोनीटर बना दिया गया । पिताजी के सरकारी अध्यापक होने की वजह से उनका तबादला क्षेत्र के आसपास के विद्यालयों में होता रहता था । पिताजी जहाँ विद्यालय में पढ़ाते थे उसी विद्यालय में नीरजा की पढ़ाई भी और पिताजी के साथ-साथ साइकिल पर जाती थी और आती थी । यह सिलसिला कक्षा 8 तक चलता रहा इसी बीच पिताजी का तबादला सिंधोरा गांव में हो गया, जो कि उनके घर से 35 किलोमीटर था । पिताजी नीरजा को साइकिल पर बैठाते और भिन्न भिन्न प्रकार की ज्ञान व पढाई की बातें करते । वह प्रश्न करते हुए कभी हिंदी अंग्रेजी का अनुवाद स्पेलिंग या शब्द अर्थ आदि पूछते , नीरजा

का श्रुति ज्ञान बढाते हुए विद्यालय आते जाते थे। पिताजी की इस प्रकार की शिक्षा व शिक्षा के प्रति लगाव के कारण नीरजा जी की हिंदी व अंग्रेजी पर मजबूत पकड़ हो गई।

2.1.2 माता पिता

डॉ. नीरजा माधव के माता का नाम विमला देवी और पिता का नाम मथुरा प्रसाद था। नीरजा जी जब छोटी थी तभी उनकी माता की मृत्यु हो गई थी। उनका लालन-पालन उनके पिताजी ने ही किया। डॉ नीरजा माधव एक प्रतिभासंपन्न लेखिका है। नीरजा जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व और लेखिका होने का श्रेय उनके पिताजी को जाता है। पिताजी के विचारों एवं उनकी बौद्धिक क्षमता का नीरजा जी के उपर बहुत प्रभाव रहा, जिसके कारण वे आत्मावलोकन करने में सक्षम बनी।

डॉ. नीरजा माधव का बचपन मा के संरक्षण तथा लाड प्यार के अभाव से पीड़ित तो रहा लेकिन पिता ने उन्हें मां के वात्सल्य और ममता से पालन पोषण किया अपनी मां के बारे में वे कहती हैं मेरी अम्मा को अपने बच्चों को पालने पहुंचने में रुचि वह एक सुंदर कोमल हृदय वाली स्त्री थी निरजाजी अपनी माता को अम्मा तथा पिता को बाबू जी कहकर पुकारती थी। नीरजाजी की माताजी आएदिनों बीमार रहती थी इसलिए नीरजा जी बचपन से ही उनकी सेवा में जुट गई। नीरजा जी के खेलने-कुदने और मोज मस्ती के दिन पढाई और माँ की सेवा में ही बीते। अपनी मां की सुंदरता तथा साहित्य प्रेम की तारीफ निरजा जी करती हैं मेरी अम्मा सर चंद की नायिका नुमा थी वह गजब की साहित्य प्रेमी थे हिंदी अंग्रेजी के अलावा उर्दू में भी दखल रखती थी हालांकि उनकी पढ़ाई सिर्फ नवी कक्षा तक हुई थी पिता ने नीरजा की मां को पति का नहीं बल्कि पिता का प्यार दिया उनके बचपन में ही माता की मृत्यु हो जाने के कारण मां से जितना स्नेह और ममता उन्हें मिलनी चाहिए थी उतनी नहीं मिली जो उन्हें उनके पिता से प्राप्त हुई। नीरजाजी के पिता प्राथमिक शिक्षक थे अगर कहा जाए कि नीरजा जी के सफल व्यक्तित्व में ही पिताजी के व्यक्तित्व का निर्माण किया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी मौलिक प्रतिभा का बीज

जो निर्जा जी में जन्मजात था उस बीज को अंकुरित और फलित करने में उनके पिता के महत्वपूर्ण योगदान को वे जानते हैं उनके पिता ने उचित देखभाल इसने संस्कार और विचारों से मिर्जा जी को सूचित किया और आगे चलकर निजा जी का साहित्यिक व्यक्तित्व निखर कर सामने आया।

" नीरजा जी के पिताजी प्राथमिक शिक्षक होने के कारण उनका बार-बार तबादला होता रहता था पिताजी के तबादले के कारण उनका अनुभव संसार विस्तृत होता गया देश के अलग-अलग क्षेत्रों की जिंदगी और समस्याओं को समझने का अवसर निर्जा जी को मिला वे अपने पिताजी की उदारता इसने सिलता तथा वैचारिक ताकि मुक्त कंठ से प्रशंसा करती हैं मिलनसार व्यक्तित्व वाले पिताजी का अपने बच्चों के साथ बहुत ही स्नेह पूर्ण व्यवहार था।अपने पिताजी के सानिध्य में जोगन ओम अमित प्रभाव निर्जा जी के मन पटल पर और चिंतन के ढंग पर पड़ा उसे वे सहज स्वीकार करती हैं मेरी आत्म लोकन की प्रवृत्ति मेरे पिताजी की देन है पिताजी से ही मैंने सीखा कि व्यक्ति को अपने बारे में भी सोचना चाहिए गंभीर होना चाहिए केवल देश और समाज के बारे में ही ना सोच कर व्यक्ति को अपनी पैकिंग बैठता ऋषि यों इच्छाओं और सपनों को भी पर्याप्त वजन देकर स्व को रंजीत एवं दुष्ट करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए"। [3]

2.1.3 परिवार

डॉ नीरजा माधव विमला देवी मथुरा प्रसाद की सबसे बड़ी संतान है अपने मातापिता की पहली बच्ची होने के कारण निर्जा को उनसे काफी प्यार मिला उनके- पिता ने बड़े प्यार से उनका नाम निर्जारा का आज हिंदी साहित्य संसार उन्हें डॉ नीरजा माधव के नाम से जानता है डॉ नीरजा माधव का प्योर परिवार संपन्न है उनके परिवार में पति डॉक्टर बेनी माधव और दो संतानें हैं। " बेटे का नाम केतन और बेटी का कुहू है बेटा और बेटी दोनों भी अच्छे महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं पिता डॉक्टर में बेनी माधव

महाबोधी इंटर कॉलेज सारनाथ वाराणसी में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं साथ ही केतन प्रकाशन के प्रकाशक के रूप में भी कार्य कर रहे हैं एक आदर्श गृहिणी के रूप में नीरजाजी अपने परिवार के हर सदस्य की चिंता करती हैं।"[4]

बहुत कम लोग जानते हैं कि माधव जी का सरनेम मिश्रा है जिनका लेखिका बताती हैं कि मेरे पति का परिवार बहुत ही सरल सहज व निश्चल सहयोगी रखित के हैं नीरजा माधव व डॉ बेनी माधव ने प्रेम विवाह किया प्रेम विवाह होने के बावजूद डॉक्टर माधव जी के परिवार ने उन्हें बहुत ही स्नेह से अपनाया और किसी भी पाबंदियों की बेड़ियों में जकड़ा डॉ नीरजा माधव वाढवे नी माधव की दो संताने हैं।

"सूर्य बालाजी का कहना है कि आम धारणा है कि उच्च सफल लेखक सफल परिवारी नहीं हुआ करते किंतु डॉ नीरजा माधव इन सबसे परे हैं। आखिर लेखिकाएँ भी प्रथमतः इंसान ही होती है। सुख-दुःख, जरूरतें उनकी अपनी भी होती हैं और ऐसे में अपनी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें कई तूफानी हलचलों का सामना करना पड़ता है । डॉक्टर तारा अग्रवाल के अनुसार "परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए लेखकीय अस्तित्व सुरक्षा के लिए लेखिका को अंगारों पर चलना होता है और सफल पारिवारिकता की अग्नि परीक्षा देनी होती है हर पल पति एवं बच्चों की देखभाल के लिए द्वारपाल की तरह मुस्तैद रहना, लेखन, मंचन, पुरस्कार, फैनमेल और तमाम औपचारिकताओं की रस्साकशी में भी पारिवारिकता का निर्वाह करना, बच्चों का कैरियर, परिवारिक कर्मकांड बुजुर्गों की अपेक्षाएँ, मेहमान, स्वास्थ्य, पति का मूड इन सभी के प्रति समर्पित होकर क्या लेखिका मनोयोग से सृजन कर सकती है ? और शिखर को छू सकती है ? जी हां बिल्कुल छू सकती है।"[5]

2.1.4 बचपन

संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय संस्कृत की पहचान में से एक है डॉक्टर ने जो माधव का बचपन भी संयुक्त परिवार में बीता माता पिता और भाई बहनों के अतिरिक्त इस परिवार में चाचा चाची चचेरे भाई-बहन आदि के समावेश था उनके बड़े चाचा का नाम श्री छोटेलाल और छोटे चाचा का नाम साहब लाल था दोनों चर्चाओं का इसने उनके परिवार में आलोक भरता रहता है।

" बचपन से ही एकांत प्रिय नीरजा जी को साहित्य पढ़ने का शौक था अतः छोटी सी उम्र में उन्होंने हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं का मौलिक व अनुदित साहित्य पड़ा पर डालता है साहित्यिक संस्कार उन पर होते गए निर्जा का बचपन कोतवालपुर में बीता उनके पिताजी उन्हें बहुत प्यार करते थे स्कूल तथा पढ़ाई में उनकी रुचि ज्यादा थी अपने माता-पिता के अलावा भाई-बहन चाचा चाची चचेरे भाई-बहनों से मुक्त परिवार में बिताए बचपन के दिनों में डॉ नीरजा माधव के लेखक व्यक्तित्व को सामग्री प्रदान की संयुक्त परिवार प्रथा वर्तमान समाज व्यवस्था के प्रति प्रतिकूल इस बात का एहसास बचपन में ही उनके मन को हुआ था ।"[6]

2.1.5 शिक्षा एवं परिवेश

नीरजा जी की प्रारंभिक शिक्षा कक्षा तीन तक घर पर ही पिताजी की निगरानी में हुई। और कक्षा 8 तक की शिक्षा गांव के आसपास के विद्यालय से उत्तीर्ण करने के बाद नीरजा ने बनारस के आर. एन. महिला कॉलेज से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की, सन 1977 में प्री यूनिवर्सिटी कोर्स में प्रवेश लिया, और महिला कॉलेज से बीए की परीक्षा पास की । उसके बाद बी.एच.यू. से एम.ए.. अंग्रेजी की डिग्री प्राप्त की। तथा वहीं बीएचयू से अंग्रेजी विषय में सरोजिनी नायडू की कविताओं पर शोध कार्य संपन्न किया। पिताजी की

हार्दिक इच्छा थी कि वे आई.ए.एस., पी.सी.एस. की परीक्षा पास कर देश या प्रदेश में सेवा दे। और पिता मथुरा प्रसाद की इच्छा थी कि वे शिक्षक बने। अतः पिताजी की इच्छा पूरी करने तथा उनके आग्रह पर नीरजा ने B.ed भी कर लिया। B.ed के उपरांत उन्हें कभी अध्यापन का अवसर नहीं मिला। क्योंकि नीरजा जी ने जैसे ही बी.एच.यू. वह पी.एच.डी. तथा B.ed की उपाधि ली, तभी उनका चयन यूपीपीसीएस के द्वारा शिक्षा विभाग में अधिकारी पद पर हो गया। शिक्षा विभाग में अधिकारी पद पर कार्यभार संभालते ही उनका चयन संघ लोक सेवा आयोग के द्वारा आकाशवाणी में अधिकारी पद पर हो गया। आकाशवाणी में अधिकारी पद पर चयन से उनके पिताजी को अत्यंत हर्ष हुआ। पिताजी ने बताया कि मेरा सपना था कि मेरे घर परिवार का कोई सदस्य आकाशवाणी में कार्य करें। अपने पिताजी के बारे में नीरजा जी बताती हैं कि-

"मेरे बाबूजी को कम दाम वाली फिल्में देखने का शौक था। रविवार के दिन वे तहसील जाते थे, सिर्फ फिल्में देखने के लिए। कभी-कभी मुझे भी अपने साथ ले जाते थे। दो-तीन बार मेरी सहेली भी मेरे साथ फिल्म देखने आई थी। बाद में उन्होंने फिल्म दिखाने ले जाना बंद कर दिया। पिता के इस शौक की वजह से नीरजाजी में फिल्मों के प्रति रुचि निर्माण हुई। "[7]

"नीरजा जी को कैशोर्य काल में दूसरों की बातें सुनने का शौक था। जिंदगी में सुनना और पढ़ना उनके लिए अधिक प्रेरणास्पद क्षण है। नीरजा एक बुद्धिमान छात्रा समझी जाती थी। छोटी उम्र में ही निर्जा को पढ़ने का शौक लगा था। आगे चलकर वह सब बढ़ता ही गया। पढ़ने के साथ- साथ नीरजा जी चित्रकला और खेलकूद में भी रुचि रखती थी। पत्रकारिता में उन्होंने विशेष रूप से योग्यता प्राप्त की थी। नीरजा जी ने स्कूल जीवन से ही वाद-विवाद की प्रतियोगिताएं, भाषण प्रतियोगिताएं, और चित्रकला में सक्रिय हिस्सा लेकर नाम रोशन किया। "[8]

2.1.6 सम्मान एवं पुरस्कार

हिंदी साहित्य को अपनी मौलिक लेखनी के द्वारा नीरजा माधव जी ने समृद्ध किया है। नए- नए विषयों पर लेखन से ही नीरजाजी ने अपनी अलग पहचान बनाई है। हिंदी साहित्य में अपनी सशक्त रचनाधर्मिता के कारण उन्हें सम्मानित भी किया गया है। डॉ. नीरजा माधव जी को कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं वह निम्नस्वरूप हैं।

1. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा दिया जाने वाला' सर्जना पुरस्कार ' सन् 1997 में उनकी रचना 'चिटके आकाश का सूरज' के लिए मिला।
2. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा प्रदत्त ' यशपाल पुरस्कार' उनके कहानी संग्रह ' अभी ठहरो अंधी सदी' को 1999 में दिया गया।
3. सन् 2006 में उनको ' मध्य प्रदेश साहित्य अवार्ड' पुरस्कार मिला।
4. अखिल भारतीय आध्यात्मिक उत्थान मंडल' कोलकाता द्वारा ' अनुपमेय शंकर' उपन्यास को 2009 में 'शंकराचार्य पुरस्कार' प्राप्त हुआ है।
5. मध्यप्रदेश राज्य भाषा प्रचार समिति' भोपाल द्वारा ' शैलेश मटियानी राष्ट्रीय कथा पुरस्कार' 2009 में उनके कहानी संग्रह 'चुप चंतारा रोना नहीं' को प्राप्त हुआ।
6. सन 2010 में 'मध्य प्रदेश भारतीय हिंदी साहित्य सभा' द्वारा दिया जाने वाला ' राष्ट्रीय साहित्य सर्जक सम्मान' उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व के लिए प्राप्त हुआ।

2.2 नीरजा माधव का कृतित्व

डॉ नीरजा माधवजी ने विद्यार्थी जीवन में ही कविता लिखना प्रारंभ कर दिया था। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा है कि मैंने लेखन कार्य कविताओं से प्रारंभ किया है। " शुरुआत तो कविताओ से ही की लेकिन पहले प्रकाशित हुए मेरे लेख। लेख मेरा बहिर्मुखी रूप था तो कविता मेरी आंतरिक बनावट। एक में सहज कल की तो दूसरे में अव्यक्त प्रेम का मृदु स्पंदन।"[9]

नीरजा जी ने हिंदी की सभी विधाओं में रचनाएं की हैं लेखिका की कविताएं बहुत आदर्शवाद से संबंधित नहीं रहती है बल्कि उनके मन के भाव हैं जो कविता के रूप में बाहर आते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में राग-विराग, लौकिक-यथार्थ, स्वर्ग, अध्यात्म आदि पर अपनी भावनाओं को निरूपित किया है। अब तक उनके कुल चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

2.2.1 कविता संग्रहों का परिचय

1. प्रथम छंद के स्वप्न :

इस संग्रह में नीरजा जी के विद्यार्थी जीवन से संबंधित कविताएं हैं। कविताओं के अलावा भी इसमें अन्य लेख, कहानी-संस्मरण आदि छपे हैं। यह एक रचनाकार के प्रारंभ की सभी तरह की रचनाओं का संग्रह है, यह भले ही उच्च कोटि का न हो, परंतु एक नए रचनाकार के भाव विस्तार की नजर से यह संग्रह नीरजा जी के काफी निकट है।

2. प्रस्थानत्रयी:

डॉ. नीरजा माधव का यह प्रथम काव्य संग्रह है। यह केतन प्रकाशन, सारनाथ, वाराणसी से सन 2000 ई॰ में प्रकाशित है। यह तीन सर्ग में विभाजित प्रथम लोक सर्ग, मध्य सर्ग व तृतीय सर्ग बोध सर्ग नाम से है, जिसमें कुल पचपन कविताएँ संग्रहित हैं।

प्रथम सर्ग की कविताओं में नारी की भावनाओं को प्रकृति से संबंधित दिखाया गया है। जबकि द्वितीय सर्ग की कविताओं में अध्यात्म की भावनाएं मिलती हैं। प्रस्थानत्रयी कविता संग्रह का तृतीय सर्ग में भी ज्ञान, अध्यात्म व प्रकृति के भाव मिलते हैं।

3. प्यार लौटना चाहेगा :

डॉ नीरजा माधव का यह दूसरा काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन नेशनल पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली से 2013 ई॰ में हुआ। इस संग्रह में कुल 36 कविताएँ हैं जिनमें मुख्यतः प्रकृति, मानवता, देशभक्ति, पर्यावरण संरक्षण और कुछ कविताओं में नारी के गुणों की भी चर्चा हुई है। उन्होंने इस संग्रह में लोक भावना, लोक कल्याण व लोक रंजक आदि को ध्यान में रखकर कविताओं का संग्रह किया है। इसमें समाज की समस्याओं पर भी कविता लिखी की गई है।

4. लिखते हुए शोकगीत :

लेखिका नीरजा माधव का यह चौथा काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी से सन् 2014 में हुआ। इस संग्रह में नीरजा जी ने मां से अलग होने के दुःख में लिखी हैं। डॉ. नीरजा जी ने इस संग्रह में माँ के वियोग में लिखा है। " इस संग्रह में माँ नाम का व्यापक अमिट तत्व एक ऐसा ही शाश्वत अस्तिभाव है जो उद्घोषित महानताओं से आतंकित या मुग्ध नहीं होता है। एक सहज मन की सार्थक तन्मयता जो इतिहास से बहुत पीछे तक जाती है और भविष्य के गर्भ में भी गहरे तक पैठ बनाये हुए है।"[9] इस धरती पर माँ का रिश्ता सबसे बड़ा होता है। माता हर जीव के लिए आवश्यक होती है। और माता एक ही हो सकती है, मतलब कि मां का स्थान कोई नहीं ले सकता है।

2.2.2 कहानी संग्रहों का परिचय

1. चिटके आकाश का सूरज:

यह डॉ॰ नीरजा माधव का प्रथम कहानी संग्रह है। इसका प्रकाशन 1997 ई॰ में केतन प्रकाशन सारनाथ, वाराणसी से हुआ। इसमें कहानियों की कुल संख्या 14 है। इस संग्रह की आधी कहानियां स्त्री के जीवन से संबंधित हैं, जैसे अनुगूँज, अपने न होने का एहसास, मंजिल न थी, अपना व्यूह, वह नहीं तो यह, सुभद्रा का चक्रव्यूह, बच के आदि। इसमें स्त्री से संबंधित संवेदनशीलता, स्नेह, मन:दशा, प्रेम, समर्पण, स्त्री का विभिन्न सामाजिक व पारिवारिक संबंधों आदि का विश्लेषण किया गया है । इसके अतिरिक्त गुरुत्वाकर्षण, चिटके आकाश का सूरज, भंवरी आदि कहानियां अलग-अलग विषयों पर आधारित हैं। जैसे 'बिजूका' कहानी वृद्धावस्था के दर्द को लेकर लिखी गई हैं। फांस, शप्त और वह चली गई आदि कहानियों में नारी से संबंधित अन्य विषय को उठाया है। इस संग्रह में स्त्रियों से संबंधित कई कहानियां शामिल की गई हैं। इस संग्रह की भूमिका में लेखिका नीरजा माधव स्वीकार करती हैं कि " मेरी कहानियों में नारी की पीड़ा है, संत्रास है और विवशता भी, परंतु साथ ही है- एक विद्रोही तेवर। आज की विसंगतियों के खिलाफ विद्रोह। निर्मल व असहाय होते हुए भी आत्मविश्वास और स्वाभिमान से भरी नारी। जीवन की तमाम चुनौतियों को स्वीकार करती है।"[13]

2. अभी ठहरो अंधी सदी :

यह डॉ. नीरजा माधव का दूसरा कहानी संग्रह है। यह 1998 ई॰ में केतन प्रकाशन, सारनाथ, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में नीरजाजी के 11 कहानियों का संग्रह मिलता है। 'अभी ठहरो अंधी सदी' कहानी नीरजा जी ने आजादी की लड़ाई में

शहीद हुए लोगों को समर्पित की है। 'पुन्नो के दारजी' 'देश के लिए' 'लड़ाई जारी है' आदि कहानियां देशप्रेम की भावना से भरी हुई हैं। इसके अतिरिक्त 'नया फ्लैट' 'एरियर' आदि कहानियों मे समाज की विभिन्न विसंगतियों पर व्यंग किया गया है। क्योंकि समाज में जब व्यवस्था के खिलाफ कार्य होता है तो वहां व्यंग ही पैदा होता है। इसमें आर्थिक विपन्नता को झेल रहे लोगों का चित्रण है। 'सांझ से पहले' व 'घलुआ' कहानी में डॉ नीरजा माधव ने वृद्धों की पीड़ा को दिखाया है। 'उत्तरार्ध की किरण' कहानी में नारी की पीड़ा व उस पर होनेवाले उत्पीड़न को दिखाया गया है। लेखिका ने 'हव्वा' कहानी में नैना के माध्यम से आधुनिक कामकाजी महिलाओ की समस्याएं और उसकी मनोदशा के साथ-साथ समाज की पितृसत्तात्मक सोच को उजागर किया है।

3. आदिमगंध तथा अन्य कहानियां :

डॉ॰ नीरजा माधव जी का यह तीसरा कहानी संग्रह है। यह संजय प्रकाशन, गोलघर, वाराणसी से प्रकाशित है। इस संग्रह में कुल 10 कहानियां हैं, जो कि अलग-अलग विषय पर लिखी गई है। 'शीर्षक क्या दूं?' यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है। हरीतिमा, सुदेशना, व मैनावती इन तीन स्त्रियों के माध्यम से लेखिका ने स्त्री विमर्श की विभिन्न भावना- दुर्भावना को स्पष्ट किया है। 'ताकि' कहानी में ग्रामीण व नगरी जीवन शैली को दिखाया है। 'कतरनो वाली फाइल' में पारिवारिक समस्याओ के साथ में बुजुर्गों की दशा का चित्रण किया गया है। स्त्रीयों को लेकर लिखी गई 'पथदंश' कहानी में शिक्षित व अशिक्षित नारियों की स्थिति के साथ साथ अपने व समाज के प्रति सोच को दिखाया गया है। 'चांद से उतरकर' कहानी में पर्यावरण को चित्रित किया गया है, पर्यावरण सुरक्षा को वैश्विक समस्या बताया गया है। 'उष्ट्र उष्ट्र ही सही' कहानी में

लेखिका ने नारी के स्वाभिमान का चित्रण किया है । और पुरुषवादी मानसिकता को उजागर किया है। इसी तरह 'पृष्ठ संख्या उन्नीस सौ निन्याबे' 'लाक्षागृह' 'चेकपोस्ट' व 'सात मील लंबी कहानी' आदि कहानियां जो अलग-अलग सामाजिक विषयो पर लिखी गई है। आदिमगंध कहानी संग्रह में मानव जीवन से जुड़ी हुई कई बातों का चित्रण किया गया है।

4. पथदंश :

डॉ॰ नीरजा माधव जी का यह चौथा कहानी संग्रह है । यह ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली से 2003 में प्रकाशित हुआ है। इसमें लगभग सभी कहानियों में अलग अलग संदर्भ लिखे गये हैं। 'पथदंश' व 'मिथक वध' कहानी में महानगरों की भागदौड़ भरी जिंदगी व रिश्तो की संगति- विसंगति का भी चित्रण मिलता है। 'तूफान आने वाला है', 'किवाड़ के बिना' कहानी में पूर्वी व पश्चिमी सभ्यता की टकराहट का चित्रण है। इसमें स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य विषय पर भी बात दिखती है। 'हवाओं पर लिखी पाती' कहानी में स्त्रियों से संबंधित पुरानी व आधुनिक पीढ़ी की सोच में अंतर को दिखाया गया है। 'इसलिए भी' कहानी में नारी की मानसिकता को दर्शाया गया है। 'फेट' कहानी में समाज के उच्च वर्ग के गरीब बच्चे की मार्मिक कथा है । 'पुत्रोऽहम्' कहानी अलग विषय के साथ लिखी गई है।

5. चुप चंतारा रोना नहीं :

डॉ॰ नीरजा माधव का यह पाँचवा कहानी संग्रह है, जो सन 2007 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें कुल 11 कहानियां हैं जो अलग-अलग विषय को बयाँ करती हैं। आर्थिक विपन्नता की समस्या का चित्रण 'चुप चंतारा रोना नहीं', 'हकीम', 'ठेलिया ऊपर' कहानियों में मिलता है । स्त्री की जीवन गाथा व उसके पुरुषवादी समाज में आर्थिक

स्वतंत्रता की बात की गई है । 'अकेले चने की छंद मुक्तलय' व 'कोटर' वृद्धों की पीड़ा व आधुनिक मानसिकता को चित्रित करती कहानीयाँ है । बदलते समाज की मानसिकता व नगरी, ग्रामीण जीवन का चित्रण 'अब मैं नाचूंगी' कहानी में मिलता है । इस कहानी संग्रह को देखकर लगता है कि, लेखिका के लेखन का दायरा कितना व्यापक है । सभी कहानियों में अलग-अलग विषय जैसे कि जात पात, सामाजिक कुरीतियां' गरीबी, शोषण, पारिवारिक रिश्तो में दरार आदि का चित्रण है।

6. प्रेम संबंधों की कहानियाँ :

यह कहानी संग्रह मेधा प्रकाशन नवीन, शाहदरा, नई दिल्ली से 2007 में प्रकाशित हुआ । इसमें कुल 16 कहानियां संग्रहित हैं । 'वह नहीं तो यह' 'चिटके आकाश का सूरज' 'सुभद्रा का चक्रव्यूह' 'अपने ना होने का एहसास' 'आदिमगंध' 'उपसंहार' 'अब क्या करें ?' आदि कहानियों का संग्रह हुआ है । यह सभी कहानियाँ प्रेम में स्त्री की व्यथा का निरूपण करती है । इस संग्रह में जो कहानियां संग्रहित है । वह अन्य संग्रहो में भी शामिल हैं । इसमें उन कहानियों को वरीयता दी गई है जो कि स्त्री- पुरुष प्रेम से संबंधित हैं ।

7. वाया पांडेपुर चौराहा :

इस कहानी में कुल 17 कहानियाँ हैं । यह संग्रह आर्य प्रकाशन मंडल किताबघर गांधीनगर, दिल्ली से सन् 2014 में प्रकाशित हुआ है । इस संग्रह की कुछ कहानियाँ अन्य संग्रहो में भी मिलती हैं । इसमें सबसे प्रमुख कहानी है 'वाया पांडेपुर चौराहा' यह आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है । जो कि वाराणसी में स्थित पांडेपुर चौराहा स्वयं कथा को कहता है । यह चौराहे पर ही से देखता है कि पुलिस कैसे घूस ले रही है । अराजक तत्वो का चित्रण भी यहाँ मिलता है । वाराणसी से संबंधित साहित्यकारों

का भी चित्रण किया गया है। 'बैठन' कहानी में शिक्षा के व्यवसायीकरण और भ्रष्ट सरकारी नीतियों को दिखाया गया है। इस महंगाई व भ्रष्टाचार से गरीब निम्नवर्गीय परिवार की दुर्दशा को दिखाया गया है।

8. पत्थरबाज

इसमें कुल 11 कहानियां संग्रहित हैं। 'वह राष्ट्रपति से नाराज है' मे नई पीढ़ी की बदलती मानसिकता को दिखाया गया है। नये विषय पर लिखी गई एक कहानी 'शब्द जो तुम तक पहुंचते' मे लेखिका ने पुस्तक को मानवीय रूप देकर आत्मकथात्मक शैली में कहानी को कहा है। जिसमें पुस्तक की विवशता का चित्रण होता है। नगरीय दूषित परिवेश को दर्शाने वाली कहानी है 'रेन डांस' 'कमासुत' 'पुश्ते में मकान नंबर' 'छोटू' आदि इसमें दो कहानी ऐसी है जो राष्ट्रप्रेम से संबंधित हैं, 'सेल्यूट' व 'पत्थरबाज' इसमें पत्थल बाज कहानी में नारी पात्र को केंद्र में रखकर कश्मीर में आतंकवादियों की साजिश को दिखाया गया है।

2.2.3 उपन्यासों का परिचय

डॉ॰ नीरजा माधव की रचनाओ के परिचय के क्रम मे उपन्यासों की संक्षिप्त चर्चा की जा रही है। लेखिका ने कुल दस उपन्यासों की रचना की है सभी उपन्यास अलग –अलग व गंभीर बिषय पर लिखे गए है। इनमे से तीन उपन्यास ऐसे है जो वैश्विक स्तर के मुद्दो को ले कर लिखे गए है। सभी उपन्यासों का क्रमवार परिचय निम्नलिखित है।

1. यमदीप :

डॉ नीरजा माधव का यह बहुत ही प्रसिद्ध उपन्यास है। सर्वप्रथम यह 2002 में प्रकाशित हुआ था। अब तक इसके 3 संस्करण हो चुके हैं। यह कुल 26 सोपनों में

लिखा गया है । इसमें दो प्रमुख पात्र हैं, प्रथम नाजबीबी नामक किन्नर व दूसरी पात्र है मानवी, जो कि एक पेशेवर पत्रकार है । इस उपन्यास में दोनों पात्रों की कहानी अलग-अलग चलती है, अंत में दोनों पात्र नारी के शोषण के प्रतिकार पर एक होते हैं । और पुरुषवादी सोच के खिलाफ संघर्ष करते हैं, इसमें स्त्रियों के प्रतिकार, वृद्धों की दशा, नेताओं का भ्रष्टाचार, पुलिस प्रशासन द्वारा शोषण आदि का यथार्थ विवेचन किया गया है । इस उपन्यास में बनते विगड़ते रिश्तो को विशेष महत्व दिया गया है। जैसे नाजबीबी के बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक के सभी संबंधों का विवेचन है । क्योंकि नाजबीबी तृतीय प्रकृति की हैं । समाज व परिवार इनको अलग नजरिए से देखता है । लेखिका ने नाजबीबी की जीवन त्रासदी को फ्लैशबैक में जा कर दिखाया है । उन्होंने बहुत ही संवेदनशील तरीके से नाजबीबी में उम्र के साथ-साथ होने वाले शारीरिक परिवर्तन की विवेचना की है । उन शारीरिक परिवर्तन से जो परिवार और समाज के रिश्तो में परिवर्तन आता है, नाजबीबी के शारीरिक परिवर्तन के बाद उसके अंतर्द्वंद को भी दिखाया गया है । संभवत किन्नरों की व्यथा पर यह लिखा गया प्रथम उपन्यास है। जो कि एक बच्ची के बचपन से लेकर किन्नरों की बस्ती में वृद्धावस्था तक की ब्यथा को दिखाता है । इस उपन्यास में दूसरा नारी पात्र है मानसी जो कि एक अखबार में नियमित स्तंभ लिखती है । इस स्तंभ के माध्यम से मानवी स्त्रियों की आवाज को समाज के सामने रखती है । उपन्यास में आई.ए.एस. आनंद कुमार दोनों की मदद करते हैं, और सुधार गृह की सभी लड़कियों को बचाने में भी मदद करते है । 'नेता मन्नालाल' व सुधारगृह की संरक्षिका 'रीता देवी' को गिरफ्तार कर जेल में डालते हैं । लेखिका ने आनंद कुमार के माध्यम से आधुनिक युग के शिक्षित वर्ग के प्रतिनिधित्व को दिखाया है। इस प्रकार यमदीप उपन्यास मे नारियों के संताप व प्रतिरोध को दिखाया गया है।

2. तेभ्य:स्वधा :

तेभ्य:स्वधा उपन्यास डॉ॰ नीरजा माधव का दूसरा उपन्यास है। इसमें 10 सोपान हैं। तेभ्य स्वधा का :अर्थ है 'तर्पण'। मृत्यु को प्राप्त लोगों के लिए पिंडदान करना। यह उपन्यास नायिका प्रधान है। कथा के केंद्र में मीना शुक्ला नाम की एक लड़की है। जो अपने माता पिता के साथ रावलपिंडी में रहती है। मीना का मूल घर वाराणसी है जहां उसके दादा दादी रहते हैं। भारत- पाकिस्तान विभाजन के बाद जब जनता इधर से उधर होने लगी थी और सांप्रदायिक हिंसा होने लगी थी। तब मीना का परिवार रावलपिंडी से वाराणसी के लिए एक समूह के साथ निकला था। परंतु मीना के सिवा सभी हिंसा के शिकार हो गए। मीना को कबायली आतंकी उठाकर ले जाते हैं। कबायिली सरदार साफी खान उससे साथ बलात्कार करता है और अपनी तीसरी पत्नी बना लेता है। मीना शुक्ला जो अब अमीना बन चुकी है भागने का बार-बार प्रयास करती है परंतु पकड़ी जाती है, और बहुत प्रताड़ित होती है।बहुत प्रयास के बाद भी वह वहाँ से भाग नही पाती है। जब उसे बच्चा हो जाता है तो वह उससे ही अपनी सारी उम्मीदें जोड़ लेती है। उसे चोरी-चोरी हिंदू संस्कृति की शिक्षा देती है।उसका बेटा बड़ा होकर पाकिस्तान में लड़ाकू विमान चलाता है। जब साफी खान मर जाता है तो अमीना बन चुकी मीना अपने बेटे को लेकर 'गया' आती है। उसके हाथों कबायली हमले में मारे गए लोगों का पिंडदान करवाती है और साफी खान व पाकिस्तान की पूरी सच्चाई अपने बेटे को बताती है। वह यह भी बताती है कि तुझे मैंने आहूति की तरह पाला है। उसका बेटा पाकिस्तान जाकर सभी आतंकी ठिकानों को नष्ट कर देता है। इस संबंध में डॉ. वंदना तिवारी कहती हैं कि " नीरजा माधव का उपन्यास तेभ्य स्वधा : सन 1947 का भारत-पाक विभाजन और उससे उत्पन्न आतंकवादी समस्या व विभाजन की पीड़ा को अभिव्यक्त करता एक श्रेष्ठ उपन्यास है। जैसा कि उपन्यास का नाम है तेभ्य स्वधा : जिसका अर्थ है तुम्हारे लिए आहुति की क्रिया, पिंडदान अथवा तर्पण।"[14]

3. गेशेजम्पा :

नीरजा जी का यह तीसरा उपन्यास है। सर्वप्रथम यह उपन्यास 2006 में सामयिक प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ था। अब तक इसके 3 संस्करण आ चुके हैं। यह उपन्यास अपने देश में विस्थापित तिब्बतियों के संघर्षपूर्ण जीवन को उद्घाटित करता है। तिब्बती धार्मिक स्वभाव के होते हैं वह चीन के सामने हिंसक प्रतिरोध नहीं करते हैं। चीन इसी कारण से तिब्बतियों पर अत्याचार करता है। चीन की नीति है कि तिब्बत में धार्मिक प्रतिबंध लगाकर वहां के लोगों को पलायन होने के लिए मजबूर करके, तिब्बत को अपने कब्जे में लेना। चीनी सैनिक तिब्बती लड़कियों की हत्या कर देते हैं और लड़कों को चीनी सेना में शामिल करके तिब्बतियों के खिलाफ कार्यवाही करवाते हैं। पुरुषों को विरोध करने पर जेल में बंद कर देते हैं। इन सब हालातों के कारण तिब्बत के लोग चोरी-छिपे अपने बच्चों को तिब्बत से बाहर भेज देते हैं, ताकि वह शिक्षा व संस्कार ग्रहण कर सकें। " यह उपन्यास नीरजाजी का सबसे चर्चित उपन्यास है। गेशेजम्पा अपने देश से विस्थापित तिब्बतियों के संघर्षपूर्ण जीवन का सुख दुःख उकेरता है।"[15]

इस उपन्यास के केंद्र में गेशेजम्पा है जो 5 वर्ष की अवस्था से सारनाथ वाराणसी आकर शिक्षा ग्रहण करता है। वह बड़ा होकर वहीं पर मठ, स्कूल आदि संस्था स्थापित करके, तिब्बत से पलायन कर आए हुए बच्चों को शिक्षा व तिब्बती सभ्यता, संस्कृति को सजोने का कार्य करता है। इस उपन्यास में चीन की प्रताड़ना, तिब्बत की मार्मिक कथा के साथ, लोब्जंग, दोलमा और लोये आदि महिलाओं की त्रासदी का चित्रण किया गया है।

4. अनुपमेय शंकर -

अनुपमेय शंकर उपन्यास क्रम के अनुसार डॉ नीरजा माधव का यह चौथा उपन्यास है। यह नौ सोपानो में लिखित है। इन नौ सोपनों में शंकराचार्य के जीवन वृत्त को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें इन के जन्म से लेकर 'वैदिक' के उत्थान तक का वर्णन किया गया है। शंकराचार्य के साथ-साथ माता आर्याम्बा की ममता मई त्याग का वर्णन मिलता है। लेखिका ने कालटी ग्राम की महिलाओं के मन:स्थित को भी उजागर किया है। माँ आर्याम्बा के ममतामई स्वरूप पर डॉ. भारद्वाज जी कहते हैं कि " नारीत्व की परम आदर्श पद प्रतिस्थापित करती है। मातृत्व के आदर्शों की पराकाष्ठा है। आने वाली पीढ़ियों को मातृत्व की गरिमा का पाठ पढ़ाती है। स्वहित को लोकहित पर न्योछावर करने की सीख देती है।"12 इस उपन्यास को पढ़ते हुए जैसे-जैसे सोपान बढ़ता जा रहा था उसी तरह कथा भी गंभीर हो रही थी। सामान्य स्तर से प्रारंभ होकर उपन्यास नई-नई पराकाष्ठा को पार करता जा रहा था। ठीक शंकराचार्य के जीवन की तरह जो सागर से निकलकर पर्वतों की असीम ऊंचाइयों को पार कर रहा था। इस उपन्यास के दर्शन में भारतीयता है, अध्यात्म है। माता आर्याम्बा से शंकराचार्य जी बचपन से ही हिंदू धर्म के उत्थान के लिए सन्यास लेने की बात करते थे। ऐसी बातों से माता चकित होती रहती थी, क्योंकि वह अपने बच्चे को इतने कठिन मार्ग पर नहीं भेजना चाहती थी। परंतु शंकराचार्य अपने निश्चय के अनुसार माता को छोड़कर हिंदू धर्म के उत्थान के लिए निकल जाते हैं। एक आदर्श माता की तरह आर्याम्बा भी अपने कष्ट को सहती हैं। बाद में शंकराचार्य जब जगजीवन व अध्यात्म क्षेत्र में बड़ा कार्य कर लेते हैं, तो बेटे पर मां को गर्व होता है। इस सब की पुष्टि माता आर्याम्बा के निम्न कथन से होता है।" अल्प अवधि का तुम्हारा यह जीवन इतने महत्वपूर्ण दायित्वों से भरा था और किस तरह धरा- धाम पर तुमने उनका संपादन किया ..... तुम्हारे जीवन के मात्र बत्तीस का यह कालखंड मानो तरल होकर मेरे सम्मुख विछ गया

हो और मैं नीहार बिंदुओं में प्रतिबिंबित सूर्य के अनगिनत रूपों को एक साथ झिलमिलाते देख सकती हूं।"[13] इस उपन्यास में जगतगुरु शंकराचार्य के जीवन के कई अनछुए पहलुओं को रेखांकित किया गया है। इस उपन्यास में शंकराचार्य जी को दिव्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। जगतगुरु के दिव्य जीवन को रेखांकित किया गया है। उनके द्वारा किए गए सतकार्यों को रेखांकित किया गया है। उन्हें आध्यात्म व देशभक्त की उन्नति का पुरोधा बताया गया है। इन्हें धर्म से भटकते हुए लोगों को सतमार्ग पर लाने के लिए भगवान शिव का अवतार बताया गया है। अतः अनुपमे शंकर जगतगुरु शंकराचार्य के महत्व को निरूपित करता हैं।

5. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी :

डॉ नीरजा माधव जी का यह पाँचवा उपन्यास है यह 2009 ई॰ में राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास की नायिका दलित समाज की है जो पुलिस कांस्टेबल हैं। जिसका नाम भवप्रीता आर्या है। भवप्रीता की निजी जिंदगी उतार-चढ़ाव से युक्त है। भवप्रीता हर दिन शाम को डायरी लिखती है। इसी डायरी में वह अपनी जिंदगी के बीते हुए समय के बारे में बताती है। जब वह स्कूल में थी तब उसका एक प्रेमी था मृगेंद्र। फिर उसकी शादी रामबली से हो जाती है। जिसकी पहले से ही एक बीवी थी। एक दुर्घटना में रामबली की मृत्यु हो जाती है, उसके स्थान पर भवप्रीता पुलिस में शामिल हो जाती है अब वह अपने बेटे गौतम और अपनी बूढ़ी मां के साथ रहती है। उसकी ड्यूटी बनारस शहर के कई स्थानों पर लगती है। वह हर स्थान की बात अपनी डायरी में लिखती है। जैसे अपने सह पुलिसकर्मियों की बात, साथ के अधिकारियों द्वारा शोषण की बात, पुलिस के अंदर भ्रष्टाचार आदि की विवेचना भी मिलती है। उसकी ड्यूटी विश्वनाथ मंदिर सुरक्षा में लगती है। वह इतिहास पुराण की बातें भी करती है, सांप्रदायिक दंगे आदि के प्रसंग का भी निरूपण है। आतंकवाद पर चिंतन भी है। भवप्रीता स्वयं एक

स्वाभिमानी नारी है । लेखिका ने भवप्रीता का चरित्र आधुनिक युग की पीढ़ी के लिए एक आदर्श की तरह बनाया है।

भवप्रीता अपना अस्तित्व समाप्त नहीं करना चाहती है । वह किसी के लिए इतना सहज नहीं बनना चाहती है की कोई भी उसका फायदा उठाये । भवप्रीता का अपने प्रेमी मृगेंद्र से अकेले मिलने न जाना एक नारी के अस्तित्व को स्थापित करता है । पितृसत्ता की मानसिकता के अनुसार चलना आधुनिक नारी को स्वीकार नहीं है । अब नारी पुरुषों के लिए सहज प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं है उसकी अपनी इच्छा – अनिच्छा है।

अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी' की नायिका दलित कामकाजी महिला है। यह चरित्र लेखिका ने एक प्रतीक की तरह रखा है कि आधुनिक समय में यदि ऐसी स्त्री को यह सब झेलना है तो शहर और आधुनिकता से दूर रहने वाली स्त्रियों की दशा कैसी होगी ।

6. ईहामृग :

ईहामृग उपन्यास बुद्धदर्शन से संबंधित है। यह भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली से 1910 ई॰ में प्रकाशित हुआ था। इसमें कुल 18 सोपान है। इस उपन्यास के मुख्य पात्रों में अमेरिका से आए पिता- पुत्री हैं जो यहां आकर बुद्ध के विचारों पर चिंतन, मनन, अनुसंधान करते है। पिता ने अपना नाम 'अलभ्यानंद' व पुत्री ने अपना नाम 'गौरी' धारण किया है। इस उपन्यास में दो अन्य नारी पात्र हैं मंजूलरानी व फुलझड़ी। विदेश से आई गौरी व भारतीय रीति-रिवाजों परंपराओं का अनुसरण करने वाली फुलझड़ी व मंजुलरानी की मानसिकता में अंतर को दिखाया गया है। यहां पर पाश्चात्य व भारतीय संस्कृति दोनों की तुलना की गई है। अतः यह उपन्यास स्त्री की त्रासदी का विवेचन करता है। इस रचना में नगरीय व ग्रामीण परिवेश को दिखाया गया है, दोनों स्थानों के जीवन-यापन व मानसिकता को भी स्पष्ट किया गया है। रचना का कवर पेज देख कर ही प्राचीन

समय से अब तक के समय का आभास हो जाता है। सामाजिक विभिन्नता के अलावा इस उपन्यास में बुद्धधर्म के दर्शन को उद्घाटित किया गया है। शांति की प्राप्ति धर्म के माध्यम से संभव है। परंतु धर्म का उपयोग व व्याख्या अब लोग अपने अपने हित के माध्यम से करने लगे हैं। इन्हीं सभी सामाजिक व धार्मिक द्वंद परिवर्तन का अध्ययन इस उपन्यास में किया गया है। इसके इतर इसमें सरकार व निजी संस्थाओं के दोगलेपन को दिखाया है कि कैसे भ्रष्टाचार करते हैं। इसमें हंसू नामक लड़का, आधुनिक लड़के व मां-बाप के लाड - प्यार में बिगड़ जाने वाले पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक मूल्यों के ह्रास के साथ बुद्ध की भूमि सारनाथ में नष्ट होते मानव मूल्यों को भी उद्घाटित किया गया है।

7. धन्यवाद सीवनी :

डॉ. नीरजा माधव द्वारा धन्यवाद सिवनी उपन्यास जोकि केतन प्रकाशन सारनाथ से प्रकाशित है। यह उपन्यास नौ सोपनों लिखा गया है। मध्य प्रदेश के सीवनी के प्रति लेखिका ने अपना धन्यवाद ज्ञापित करते हुए लिखा है। क्योंकि सीवनी जगतगुरु स्वामी स्वरूपानंद का जन्म स्थल है। उन्हीं के जन्म स्थल को पावन भूमि बताने के लिए ऐसा शीर्षक रखा है, क्योंकि स्वामी जी अपने जन्म स्थल को याद करते हुए अतीत में डूब जाते थे। स्वामी जी को बचपन से ही पशु- पक्षी व देशसेवा से विशेष अनुग्रह था। इसलिए स्वामी जी ने सिर्फ 13 वर्ष की उम्र में अपनी माता से गृहत्याग की आज्ञा लेकर स्वामी मुक्तानंद के साथ प्रकृति व सृष्टि की सेवा के लिए निकल पड़े। देश की सेवा करते- करते स्वामी स्वरूपानंद को कई बार जेल की यात्राएं भी की हैं। उनका जीवन वैराग्य और देश प्रेम की भावना का अमूल्य संगम है। धन्यवाद सिवनी उपन्यास में स्वामी जी के बाल्यकाल से उनके पीठाधीश्वर बनने तक की यात्रा का वर्णन है। उनका जीवन एक देशप्रेमी, स्वतंत्रता को संघर्षरत सैनिक, मानव कल्याण के लिए समर्पित था। उपन्यास का प्रारंभ आश्रम परिसर

के प्राकृतिक वर्णन से किया गया है। स्वामी जी का बचपन का नाम पोथीराम था। बचपन से ही वे प्रकृति को देख कर खुश होते और उसी के निमित्त रहने की भी बात करते थे। उनकी रूचि आध्यात्मिक के प्रति थी अतः उन्होंने देश सेवा के साथ-साथ अध्यात्म के लिए अपना जीवन दे दिया। जैसा कि स्वामी जी के साथ अध्यात्म व धर्म के अनुयायी व प्रशंसक थे, सभी साथ कार्य करते थे। उन्होंने गौ सेवा के पक्ष व गौ हत्या रोकने के लिए बहुत जनसंपर्क किया था। गांव, शहर हर जगह उनके अनुयाई हुआ करते थे। इन्हीं शिष्यों को वे प्रेरित करके देश सेवा व अंग्रेजों से आजादी के लिए संघर्ष की बात की। तब अंग्रेजों ने इन्हें बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। स्वामीजी जेल में रहकर भी आजादी के लिए कैदियों को तैयार करने लगे। स्वामी जी के भाई रामरक्षा भी अंग्रेजों की नौकरी छोड़ कर देश व धर्म की सेवा में लग गए। स्वामी जी ने अपने ज्ञान व अध्ययन के बल पर लोगों को प्रवचन देते थे। जो लोग पहले हिंदू धर्म छोड़कर दूसरा धर्म अपना लिए थे। उन्हें भी धर्म के महत्व को बता कर फिर से अपने धर्म में वापसी कराई।

8. रात्रिकालीन संसद:

सभी उपन्यास की अलग-अलग विषय शैली होने से डॉ नीरजा माधव के लेखन प्रतिभा का पता चलता है । गंभीरता के साथ विषय को पाठकों से सम्मुख रखने में लेखिका डॉ नीरजा माधव एक सफल लेखिका हैं । 'रात्रिकालीन संसद' उपन्यास प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से 1913 में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास का प्रारंभ सारनाथ वाराणसी के आकाशवाणी केंद्र से होता है । कुछ लोग जैसे मुकुल, आफताब आलम, अवधेश राज व अमोदिनी आदि मुख्य पात्र हैं । इस रचना में भारत देश में हो रहे आतंकी हमलों पर बहस चल पड़ी है । हमला करने वाले हमेशा एक ही समुदाय के रहते हैं ,परंतु मरने वाले सभी समुदाय के रहते हैं । इन्हीं बातों को लेकर जो अमानवीय वैमनस्य फैल रहा है

उस पर चिंता व्यक्त की गई है। इस रचना के हर सोपान में अलग-अलग कथा है। जिससे सभी पात्रों को लेकर, उनकी परिस्थिति को लेकर विभिन्न विषयों को उद्घाटित किया गया है। इसमें अमोदिनी व मानसी नारी पात्र हैं, दोनों अपने जीवन प्रताड़ना को कहती हैं। अतः उपन्यास में नारी त्रासदी को भी शामिल किया गया है। आकाशवाणी के संग्रहालय में विभिन्न राजनेताओं पर आजादी के आंदोलन व उसके बाद के भी राजनेताओं की आवाजें स्टोर रूम में रखी हुई है उस के संदर्भ में इस उपन्यास में चर्चा की गई है इससे संबंधित विषय पर उठाया गया है।

9. देनपा: तिब्बत की डायरी

यह उपन्यास 2014 में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इसमें डायरी शैली का प्रयोग किया गया है। इसमें मुख्य पात्र 'देनपा' नामक तिब्बती महिला है, जो कि अपने जीवन के में घटी हुई घटनाओं, प्रताड़ना की बात देवयानी से करती है। किस तरह चीन का कुचक्र तिब्बत पर चल रहा है इसमें सबसे ज्यादा प्रभावित वहां के महिलाएं हैं। उनका शारीरिक शोषण चीनी सैनिक सालों से करते आ रहे हैं। उन महिलाओं का जीवन नरक बन गया है वहा की सभी महिलाएं चीनी सेना से नफरत करती हैं। कुछ महिलाओं को तो चीनी सैनिकों से बच्चे भी हो गए हैं, वे महिलाएं चाहती हैं कि यह बच्चे बड़े होकर चीनी सेना में भर्ती हो जाएं और उसी सेना को मारकर हमारे अपमान का बदला ले। चीनी सेना के खिलाफ अपने बच्चों को यह महिलाएं हथियार की तरह उपयोग करना चाहती हैं। इन्हीं प्रताड़नाओ के कारण तिब्बत से पलायन हो रहा है। ताकि तिब्बती अपनी सभ्यता व संस्कृति को बचा सके, इसी कारण से तिब्बती बच्चों के लिए स्कूल और हॉस्टल बनाया गया है। उन्हें शिक्षित किया जा सके और अपनी सभ्यता को अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। इस उपन्यास में तीन नारी पात्रों के द्वारा तिब्बत में

नारियों की स्थिति को स्पष्ट किया है । इसमें 'लोये' है जिसकी प्रेम कथा को उपन्यास में दिखाया गया है। 'थिनले' व 'लोब्जंग' ने चीनी सेना का प्रतिकार का बीड़ा उठाया है। वह तिब्बत की योद्धा की तरह है । उनकी योजना हैं, कि चीनी सेना के लोग तिब्बती महिलाओं का बलात्कार वर्षों से करते आ रहे हैं उससे उत्पन्न बच्चों की परवरिश कर के बच्चों को चीनी सैनिकों के खिलाफ करेंगे । इस तरह से तिब्बती महिलाएं अपने ऊपर हुए अत्याचार का बदला लेना चाहती हैं यह महिलाएं एक योद्धा जैसी हैं। जो अपने तरीके से चीन का सामना कर रही है।

10. त्रिपुरा :

नीरजा माधव जी का उपन्यास 'त्रिपुरा' नई दिल्ली से 2018 ईस्वी में प्रकाशित हुआ । इसमें नौ खंड हैं। यह पूर्ण रूप से पौराणिक कृति है। इसमें मूल रूप से सनातन धर्म को विषय बनाया गया है। सनातन धर्म के देवताओं को महत्वपूर्ण दिखाया गया है। उपन्यास में कामदेव की कथा है जो संसार में सभी जीवो के मन में भाव भरने का कार्य करते हैं, जैसे इच्छा, दया, प्रेम, मोह, काम आदि। यह उपन्यास सनातन धर्म परंपरा का निर्वहन करता है। इन सभी बातों के उद्घाटन के लिए नीरजाजी ने काल्पनिक पात्रों का प्रश्रय लिया है। इस उपन्यास में कामदेव के अतिरिक्त त्रिदेवो की महत्ता को दर्शाया गया है। इसमें देवी-देवताओं की कार्य परंपरा, संस्कृति आदि को दर्शाया गया है। इसमें सनातन धर्म में श्रद्धावान पात्र हैं। जैसे शंकर, ब्रह्मा, विष्णु, परशुराम, त्रिपुरा आदि। त्रिपुरा का महत्व दिखाया गया है कि सृष्टि के निर्माण में त्रिपुरा का महत्व है। त्रिपुरा व ब्रह्मा में सामंजस्य दिखाया गया है। अर्थात त्रिपुरा उपन्यास में सनातनी धार्मिक विषय को काल्पनिक पात्रों के माध्यम से महत्व को उकेरा गया है।

2.2.4 निबंध संग्रहों का परिचय :

1 . चैत्त चित्त मन महुआ :

डॉ नीरजा माधव का यह ललित निबंध संग्रह है । यह नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली से 2013 ई॰ में प्रकाशित हुआ था । इसमे 25 निबंधों का संग्रह है । इसमें 10 निबंध दर्शन चिंतन पर आधारित हैं । अन्य प्रकृति से संबंधित निबंध हैं । इसमें संग्रहित निबंधों में स्थानीय संस्कृति के साथ-साथ जनकल्याण की भावना संप्रेषित की गई है । धर्म, संस्कृति, राजनीति समाज, पर्यावरण आदि विषय पर निबंध लिखा गया है।

2. साँझी फूलन चीति :

डॉ नीरजा माधव जी का यह निबंध संग्रह यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था । इसमें भी कुल 25 निबंध हैं । जिसमें 10 वैचारिक निबंध व 15 ललित निबंध शामिल हैं । इसमें कला संस्कृति के साथ कृष्ण को विषय बनाया गया है । इसके विचारात्मक निबंधओं में तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक मुद्दों को भी विषय बनाया गया है । इसमें प्राचीन, धार्मिक पुस्तकों को भी विषय बनाया गया है, कुछ निबंधों में तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक बातों पर भी लेखन प्राप्त होता है।

3. यह राम कौन है? :

यह निबंध संग्रह प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2016 में प्रकाशित हुआ । अन्य दोनों निबंध संग्रह की तरह इसमें भी कुल 25 निबंध संग्रहीत है । इसमे 10 निबंध प्राचीन धार्मिक विषय पर हैं, जबकि अन्य 15 निबंध अलग-अलग मानवीय चिंतन वाले मुद्दों पर लिखा गया है । इसमें धर्म, अध्यात्म, पर्यावरण, समाज, राजनीति, विचारो मे

आधुनिकता आदि विषय प्रमुख हैं। इन्हीं सब विषयों पर नीरजाजी आज भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं व अखबारों में समसामयिक विषय पर निरंतर लेखन कर रही है।

2.2.5 नीरजा माधवजी की रचनाएँ पाठ्यक्रमों में

यदि किसी साहित्यिक रचनाकार की कोई रचना किसी स्कूल, कालेज के पाठ्यक्रम में शामिल की जाती है। तो यह रचनाकार के लिए गर्व की बात होती है। क्योंकि पाठ्यक्रम में शामिल होने पर रचनाकार को सामाजिक स्वीकार्यता के साथ-साथ सामाजिक पहचान भी मिल जाती है।

1. ' तेभ्य: स्वधा ' उपन्यास वाराणसी के महाविद्यालयों में परास्नातक कक्षाओं में पढ़ाया जा रहा है।
2. ' गेशेजम्पा' उपन्यास सारनाथ स्थित तिब्बती विश्वविद्यालय में पढ़ाया जा रहा है।
3. 'मेरा गांव एवं मां' कविता जो कि महाराष्ट्र में सातवीं कक्षा में पढ़ाया जा रही है।
4. ' गुड्डम' बाल नाटक महाराष्ट्र में आठवीं कक्षा में पढ़ाया जा रहा है।
5. ' चांद से उतर कर' कहानी ' सेंट जॉन्स ग्रुप' के पल्लव भाग साथ में पढ़ाई जा रही है।
6. ' चांद से उतरकर' कहानी महाराष्ट्र में छठी कक्षा में पढ़ाई जा रही है।
7. ' बेठन' कहानी,। स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय नांदेड़ के पाठ्यक्रम में स्नातक प्रथम वर्ष की पुस्तक ' हिंदी सौरव' में संग्रहित है। सत्र 2019- 20 से यह पाठ्यक्रम में अध्ययन- अध्यापन के लिए जारी है।

2.2.6 प्रकाशन कार्य

डॉ नीरजा माधव का बचपन कोतवालपुर जौनपुर में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहीं पर हुई। उच्च शिक्षा उन्होने वाराणसी से पूरी की। और वे वर्तमान में वाराणसी में ही रहकर अन्य कार्यों के साथ लेखन कार्य करती हैं। डॉ नीरजा माधव जी अपने पति डॉ. बेनी माधव के साथ मिलकर प्रेस चलाती है। जिसका नाम उन्होंने ,' केतन प्रकाशन' रखा है। उनके इस प्रकाशन का उद्देश्य प्रकाशको द्वारा लेखकों का जो शोषण होता है उस से बचाना है। सन 1997 ई. से ही ' केतन प्रकाशन' का आरंभ कर दिया गया था।

" निजी अनुभूति ने उन्हें प्रकाशन कार्य के प्रति प्रेरित किया। आज के युग के प्रकाशक किस तरह लेखकों का शोषण करते हैं और उनके आत्मसम्मान को कुचल देते हैं, यह उन्होंने अपने अनुभवों से जाना था।"[16]

2.2.7 नीरजा माधवजी की अन्य महत्व पूर्ण रचनाएँ

1.रेडियो का कला पक्ष (2017)

2. हिंदी साहित्य का कौशल नारी का इतिहास (2012)

3. साहित्य और संस्कृति की पृष्ठभूमि (2014)

4. शंकराचार्य: पीठ और परंपरा (2009)

5. भा रत रत्न: लाल बहादुर शास्त्री (2013)

6. तत्वबोध विवेचनी (2015)

7. भारत राष्ट्र और उसकी शिक्षा पद्धति (2017)

8. हिंदू धर्म स्वरूप (2015)

9. सरोजिनी नायडू: फ्रॉम टाइम टू इंटरनिटी

2.3 . समकालीन लेखिकाएँ और डॉ नीरजा माधव

डॉ. नीरजा माधव की समकालीन लेखिकाओं में श्रीमती चंद्रकिरण सोनरेक्सा, रजनी पन्नीकर, कंचनलता सब्बरवाल, शांति मेहरोत्रा, सूर्यबाला, मेहरुन्निसा परवेज, इंदुबाली, अचला नागर, शशिप्रभा शास्त्री, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, चंद्रकांता आदि प्रसिद्ध लेखिकाएँ हैं।

यहाँ पर मैने उपरोक्त लेखिकाओंउनके , साहित्य और उनके साहित्य में नारी विषयक दृष्टिकोण का अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस अध्याय में यह प्रयास है कि नीरजा माधव जी समकालीन लेखिकाओं के बीच अपना स्थान कैसे बनाए हुए हैं। लगभग सभी लेखिकाओं की रचनाओं में नारी के अस्तित्व के प्रति सहानुभूति होती है। वे अपनी कृतियों में आज की नारी की दशा और दिशा को दिखाती है। आज की लेखिकाओं के साहित्य को पढ़ने से पता चलता है कि नारी के जीवन के मायने अब पहले से बदल चुके हैं। वह स्वयं मजबूत बन रही है। आज की नारी आत्मनिर्भर रहना चाहती है । साहित्य कि गतिशीलता के संदर्भ मे डॉक्टर नगेंद्र ने कहा है कि

" साहित्य मानव समाज की भावनात्मक और गतिशील चेतना की अभिव्यक्ति है।"[१] सभी लेखिकाओं ने अपने साहित्य में नारी की उन्नति के पक्ष में विशेष ध्यान दिया है। जिससे साहित्य से भी आज की नारी की आवाज बुलंद हो रही है। इस अध्याय में समकालीन लेखिकाओं की रचनाओं में नारी के प्रति उनके नजरिए का विवेचन किया गया है।

2.3.1 चंद्रकिरण सोनरेक्सा

चंद्रकिरण जी)जिला-नौशेरा(पेशावर से है। समकालीन महिला रचनाकारों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपने गद्य- साहित्य में नारी के अधिकार व अस्तित्व की बात की है। हिंदी साहित्य में इन्हें संघर्षशील लेखिका के रूप में देखा जाता है। आपकी 'आदमखोर' कहानी संग्रह को 'सेक्सरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। इस संग्रह में महत्वपूर्ण मध्यवर्ग के जीवन यापन को आधार बनाया गया है जिसमें नारियों पर संवेदनात्मक नजरिया देखने को मिलता है। इस संग्रह की अलग-अलग कहानियों की नायिकाएँ जैसे सितारा,कांता, अरुणा, गुनिया, ललिता, उमा आदि समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता की शिकार होती हैं। अपनी कहानियों में चंद्रकिरण ने नारी शोषण की आवाज व कुंठित मानसिकता पर सवाल उठाया है। 'और दिया जलता रहा' इस उपन्यास की नायिका दीप्ति है। दीप्ति के माध्यम से लेखिका ने समाज की नारी की वेदना व दुर्दशा को दिखाया है, साथ ही नारी के ममता, प्रेम व समभाव के गुणों से निरूपित यह 'और दिया जलता रहा' उपन्यास आकाशवाणी लखनऊ के लिए रचित एक छोटा उपन्यास है। 'चंदन चांदनी' उपन्यास में लेखिका ने नारी समस्या को ध्यान में रखकर लिखा है, इसमे यह दर्शाया गया है कि नारी के प्रति कुंठित मानसिकता समाज में है, तभी तो नारी शिक्षित हो या अशिक्षित हर परिस्थिति में पुरुषों द्वारा उसका शोषण होता है। इस उपन्यास की नायिका गरिमा है जो कि एक उच्चवर्गीय शिक्षित नारी है। इस गरिमा के माध्यम से लेखिका ने नारी शोषण की मानसिकता पर बहुत ही सार्थक लेखन किया है। 'वंचिता' उपन्यास की नायिका जानकी है। वह आधुनिक नारी का प्रतीक है। लेखिका ने जानकी को प्रतीक बनाकर नारी जगत की पीड़ा को दिखाने का प्रयास किया। इसमें जानकी की इच्छा व अनिच्छा को ध्यान में न रखकर पुरुषवादी मानसिकता नारी को एक वस्तु समझता है। लेखिका ने 'वंचिता' उपन्यास

में जानकी को प्रतीकात्मक बनाकर समाज में नारी की वास्तविक स्थिति को दिखाया है। 'कहीं से कहीं नहीं' उपन्यास में मध्यवर्ग के समाज की समस्याओं को दिखाया गया है । इसमें नायक है रतन, जिसके माध्यम से लेखिका ने मध्यमवर्गीय समाज के युवाओं की आवाज को बुलंद किया है । इसमें नायिका प्रभा, एक आदर्शवादी संतान का प्रतीक है । एवं इसमें आदर्श नारी के गुण है । दया, ममता व त्याग की मूर्ति है । लेखिका चंद्रकिरणजी ने अपनी कहानी व उपन्यासों में नारी की संवेदनशीलता व उसके अधिकारों पर लेखन किया है । जो कि एक सफल नारीवादी लेखिका होने का प्रमाण है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज के अन्य पक्ष की आवाज भी उठाई है जैसे छुआछूत, आर्थिक विपन्नता आदि । इनके उपन्यासों का आधार सामाजिक है, और इनके उपन्यासों का केंद्र नारी ही होती है । इसीलिए इनके ज्यादातर उपन्यास नायिका प्रधान है। डॉ .जगदीश्वर चतुर्वेदी ने कहा है कि" अगर कोई महिला लिखना चाहे तो उसे कई मोर्चों पर एक साथ संघर्ष करना पड़ता है । इसमें पहला मोर्चा परिवार है; दूसरा मोर्चा समाज है । तीसरा मोर्चा पुरुष प्रभुत्ववाला साहित्य और चौथा मोर्चा एवं निर्णायक है आंतरिक संघर्ष का ।"[2]

2.3.2 रजनी पन्नीकर

रजनी पन्नीकरजी ने हिंदी साहित्य की गद्य विधा में अपनी रचनाएँ की हैं । इनका कहानी संग्रह है 'सिगरेट के टुकड़े' जिसमें उन्होंने समाज में चल रही विभिन्न कुप्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई है । इस संग्रह में आप तुम, दो दीप , सातवी बहन, समस्या उलझती गई ,गुणवती मौसी , सुलेखा कुसुम ,मूर्तियाँ आदि कहानियों में नारी व समाज दोनों पर बेबाक लेखन किया है । इस संग्रह की चर्चित कहानियों में 'नई पीढ़ी' कहानी में

संभ्रांत समाज की लड़की का चित्रण है । कहानी 'भगवान जल गया' में पन्नीकरजी ने छुआछूत, जो की समाज की गलत मानसिकता है उसका , शिकार हुई एक लड़की की दर्द भरी कथा है । लड़की की शादी के बाद की त्रासदी को इन्होंने 'मन की आंख' कहानी में दिखाया है। इसमें नायिका का अंतर्जातीय विवाह होता है। यह आज की लड़की की मार्मिक कथा है। रचना और स्त्री लेखन के संबंध में रेखा कस्तवार का कथन है कि " रचनाकार के दृष्टिकोण द्वारा व्यवस्था का हित ,पोषण या स्त्री की पक्षधरता अंततः स्त्री के व्यक्तित्व विकास व न्याय की लड़ाई की दृष्टि से ही अपना महत्व रेखांकित कर सकती है। बदलती सामाजिक संरचना के मध्य स्त्री के लिए निर्णय और स्त्री का निर्णय तथा निर्णय का भविष्य की स्त्री के पक्ष या विपक्ष में खड़ा होना स्त्री विमर्श के सरोकार हैं।"[३]

पन्नीकरजी का उपन्यास है 'दूरियाँ' । यह नायिका प्रधान उपन्यास है । इस उपन्यास की नायिका है 'नमिता' । पन्नीकरजी ने नमिता को आधुनिक नारी का प्रतीक दिया है। वह हरि नामक नवयुवक से प्रेम करती है। इस उपन्यास में नारी के एकनिष्ट प्रेम, त्याग व ममता की अभिव्यक्ति की गई है । 'दो लड़कियाँ' उपन्यास में लेखिका ने नारी विमर्श को पूर्ण रूप में दर्शाया है। इसमें दो लड़कीयाँ मुख्य पात्र हैं। जिनके नाम है, शशि और रंजना। इसमें लेखिका ने पितृसत्ता की मानसिकता को उजागर किया है। शशि और रंजना के रूप में नारी के संघर्षशील व विद्रोही रूप के दर्शन होते हैं। अन्य उपन्यास 'मोम के मोती' में समाज के विभिन्न स्तर पर महिलाओं की त्रासदी का चित्रण है। इसमें अनमेल विवाह को दिखाया गया है। आर्थिक विपन्नता के कारण लड़कियों का विवाह अधिक आयु वाले पुरुषों से हो जाता है। यह समाज में व्याप्त कुरीतियों का द्योतक है। पन्नीकर जी का अन्य उपन्यास 'महानगर की मीता' जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि उपन्यास में महानगर की नारियो की आवाज को उठाया है। जैसा कि पन्नीकरजी नारियो के अधिकार व अस्तित्व की

आवाज के लिए प्रसिद्ध हैं। मीता के माध्यम से उपन्यास मे महानगर की परिस्थितियों व समाज की पुरुषवादी सोच का परिष्कार किया है अतः पन्नीकर जी नारी विषयक मुद्दों को अपने उपन्यास व कहानी में उठाया है।

2.3.3 कंचनलता सब्बरवाल -

कंचनलताजी उत्तर प्रदेश की रहनेवाली हैं । इन्होंने भी हिंदी साहित्य में उपन्यास व कहानियों के माध्यम से अपना योगदान दिया है । इनके साहित्य में समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों को दिखाया गया है। इन्होने नारी के बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक सौंदर्य को महत्व दिया है। नारी जीवन की त्रासदी के साथ मन:स्थिति का भी चित्रण किया है । कंचनलताजी ने 'मूक तपस्वी' उपन्यास में नारी के विषम परिस्थिति से लड़ने व अपने अधिकारों के लिए सतत संघर्ष को निरूपित किया है। नंदनी एक शिक्षित स्त्री है । परंतु पुरुषवादी सोच में नारी को व स्थान नहीं दिया जाता है जिसकी वह हकदार होती है । पुरुष स्त्री के योग्य होने पर भी उसे अपने से पीछे ही रखना चाहता है । शिक्षित नंदिनी के माध्यम से लेखिका ने समाज में व्याप्त नारी के प्रति द्वेष को अंकित किया है । कंचनजी के उपन्यास 'अनचाहा' मे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की बात कही गई है । लेखिका ने अरुणा व मृदुला के पात्रों द्वारा समाज के निम्न वर्ग व गरीबी की परिस्थितियों को दिखाया है, उन्हों ने यह भी दिखाया है कि वर्ग चाहे जो भी हो शोषण नारी का ही होता है । इस संदर्भ में निहार गीते ने लिखा है कि " नारी घर रूपी नीड़ को बनाए रखना चाहती है । पुरुष इस नीड को बनाए रखने की अभिलाषा के बावजूद नवीन के प्रति आकर्षण नहीं छोड़ सकता है।"[४] समाज में वर्गीय भेद, गरीबी, बेरोजगारी की समस्या को इस उपन्यास के माध्यम से उठाया गया है । सब्बरवालजी का उपन्यास 'त्रिवेणी' जो कि

आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। इसमें नारी पात्रों की पीड़ा आत्मकथा के रूप में मिलती है। जो अस्तित्व को बचाने का संघर्ष करती है। इसमें तीन प्रमुख नारी पात्र हैं। चंद्रिका, सुरभि, विजयश्री तीनों शोषण के विरुद्ध विद्रोह करती हैं। लेखिका स्त्री विमर्श की आवाज में परिपक्व दिखाई देती है। उनका एक उपन्यास है 'संकल्प' इसमें नारी को परंपरावादी, ममता व त्याग की मूर्ति के रूप में दिखाया गया है। जो अपने से ज्यादा जनकल्याण को महत्व देती है। अतः कहा जा सकता है कि सब्बरवालजी ने नारी विमर्श की आवाज सफलतापूर्वक उठाई है।

2.3.4 सूर्यबाला

सूर्यबालाजी भी उत्तर प्रदेश वाराणसी से है। इन्होंने हिंदी साहित्य में कहानी, उपन्यास व हास्य-व्यंग्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है। सूर्यबालाजी वर्तमान समय में स्त्री विमर्श पर एक सशक्त लेखिका है। उनके संबंध में डॉक्टर रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है कि " अपने को बिना किसी परम्परा से जोडे युग और समाज की वास्तविकता को अपने अनुभव, सोच और विवेक के सहारे व्यक्त करती हुई कथा- लेखिका सूर्यबाला रचना के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं।" इनका प्रसिद्ध उपन्यास है 'अग्निपंख' इसमें नायक जयशंकर प्रसाद जो कि सामान्य परिवार से है। उसके पिता का स्वर्गवास हो चुका है। विधवा मां के साथ रहकर वह जीवन यापन करता है। जयशंकर की आर्थिक विपन्नता व समाज की कठोरता का चित्रण 'अग्निपंख' में श्री बालाजी ने किया है। उनका दूसरा उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' है। इसमें नारी की त्रासदी की मार्मिक कथा है। इसकी नायिका शिवा है । शिवा का विवाह ऐसे पुरुष से होता है जिसकी पहली पत्नी से दो लड़कियाँ हैं और वह उम्र से बहुत ज्यादा है। शिवा समाज की सामान्य पात्र जैसी लगती है। जिसकी इच्छा-अनिच्छा का कोई मोल नहीं है। शिवा अपनी जिंदगी में परेशान रहती है। परंतु समाज के सामने वह एक ममता व त्याग की प्रतिमूर्ति बनकर रह जाती है। 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास में भारतीय नारी के

त्याग, तपस्या, बलिदान व क्षमतावान नारी के दर्शन मिलते हैं। इसमें मूल रूप से अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित किया गया है। सूर्यबालाजी का अगला उपन्यास है 'यामिनी कथा'। इसमें लेखिका ने नारी की जिंदगी की तनावपूर्ण स्थिति को दिखाया है। एक स्त्री के मनोविज्ञान का स्पष्ट चित्रण मिलता है। इसमें विषम परिस्थितियों में फँसी स्त्री का द्वंद भी दिखाई देता है, साथ ही बेमेल-विवाह व विधवा-विवाह आदि समस्याओं को भी उजागर किया गया हैं। स्त्री के विविध रूपों को भी दिखाया गया है।

'मानसी' सूर्यबालाजी का बहु चर्चित उपन्यास है। जिसमें नारी के एक कनिष्ठ विश्वास ,त्याग आदि को दिखाया गया है। पितृसत्ता की कुंठा व दुर्भावना को इस उपन्यास का नायक जो कि अध्यापक है उसके माध्यम से दिखाया गया है। इसमें पुरुष की हीन कामवासना- का चित्रण है। नायिका कणिका व जया को आदर्श व निष्ठापरक स्त्री दिखाया गया है। इस उपन्यास में पितृसत्ता की गंदी मानसिकता को तुच्छ व नारी को ममता व त्याग की प्रतिमूर्ति दिखाया गया है। वर्तमान समाज से लोहा लेती स्त्री की कहानी सूर्यबाला के उपन्यास 'जूझ' में मिलती है। भ्रष्टाचार व कदाचार के खिलाफ लड़ना वर्तमान समाज में बहुत मुश्किल है और यह विद्रोह करने वाली यदि स्त्री हो तो समस्त समाज उसके खिलाफ हो जाता है। अतः 'जूझ' उपन्यास भ्रष्टाचार के कारण विद्रोह करने वाली नायिका के संघर्ष की कथा है। इस प्रकार लेखिका ने समाज की कुरीतियों व पितृसत्ता की गलत नीतियों पर आवाज उठाई है।

2.3.5 मेहरून्निसा परवेज

हिंदी साहित्य की इस कलमकार ने उपन्यास व कहानियों में अनेक रचनाएँ की है। वह वर्तमान काल में स्त्री विमर्श पर अपनी आवाज बुलंद करने वाली लेखिका हैं। इन्होंने अपनी रचनओं से समाज में वर्ग, जाति, अंधविश्वास आदि को उजागर

करने का सार्थक प्रयास किया है। इनकी रचनाएं हिंदी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण निधि हैं । मेहरुन्निसाजी के संदर्भ में डॉक्टर जय शंकर पांडे ने लिखा है कि " मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में वर्तमान भारतीय जीवन और उनकी समस्याओं को अनेक कोणों से बड़ी गहराई के साथ अंकित किया है।"[६] मेहरुन्निसाजी का उपन्यास 'आंख की दहलीज' जो की नायिका प्रधान उपन्यास है । इसमें नायिका तालिया है । इसमें मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को दर्शाया गया है। इसमें नारी की मानसिकता को दर्शाया गया है । तालिया को बच्चा नहीं होता तो वह अपने पति की दूसरी शादी कराती है, और बच्चे के लालच में वह स्वयं अपने मायके में रहकर जावेद से अनैतिक संबंध भी रखती है। इस उपन्यास में स्त्री की यथार्थ मानसिकता को दिखाया गया है । मेहरुन्निसाजी का अगला चर्चित उपन्यास है 'उसका घर' इसमें एक नारी के जीवन की अपनी शादी व पति के लिए संघर्ष की कथा है। इसमें रेशमा नायिका है, उसकी मां है एल्मा। दोनों के आपसी तनाव व संघर्ष की कथा है । रेशमा अपना विवाह अंतर्जातीय करती है । मां उसके खिलाफ रहती है । रेशमा अपने निर्णय को सही साबित करने व पति को इज्जत दिलाने के लिए संघर्ष करती है । अतः यह उपन्यास नारी के अस्तित्व और इच्छा की विवेचना करता है । 'कोरजा' उपन्यास पारिवारिक मूल्यों को ध्यान में रखकर लिखा गया है। अन्य उपन्यासों की तरह परवेजजी का यह उपन्यास भी मुस्लिम संस्कृति की विवेचना करता है । 'कोरजा' उपन्यास में अरमान व रहमान दो पात्र हैं । इसमें नारी की दशा-दिशा का चित्रण मिलता है । इसमें मुस्लिमों व आदिवासियों की जीवन शैली का उल्लेख भी मिलता है।

'अकेला पलाश' उपन्यास में महिलाओं के प्रति पुरुषों की कुंठित मानसिकता को दर्शाया है। 'तहमीना' एक कामकाजी महिला है जो कि अपनी मेहनत पर कामयाब हुई है। परंतु समाज के कुछ दूषित मानसिकतावाले लोग उसे परेशान करते हैं। तहमीना का

पति भी उसे चरित्रहीन समझता है । वह शिक्षित है एवं नौकरी करती है । इसलिए पुरुषवादी मानसिकता के लोगों को खटकती है । 'पांसग' उपन्यास में मेहरून्निशाजी ने भारत-पाकिस्तान बंटवारे के समय का चित्रण किया है। इसमें आपा नायिका है जो भारत की है , परंतु विभाजन के बाद भारत के लोग उसका शोषण करते हैं । इस उपन्यास में तत्कालीन भड़की सांप्रदायिकता की हिंसा का चित्रण है। जिसमें हिंदुओं द्वारा एक मुस्लिम स्त्री की प्रताड़ना होती है । इन सभी उपन्यासों के अध्ययन से मेहरून्निसा जी का लेखन स्त्री विमर्श के अलावा बदलते परिवेश को उद्घाटित करता है। जो कि एक सफल लेखक का गुण है।

2.3.6 शशिप्रभा शास्त्री

शशिप्रभा शास्त्री की रचनाएँ हिंदी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने उपन्यास व कहानियों में अपना योगदान दिया है। वह पश्चिमी उत्तर प्रदेश (मेरठ शहर) की रहने वाली है। ' उम्र एक गलियारे की' उपन्यास में नारी की इच्छा व स्वतंत्रता की बात की गई है, साथ ही पुरुषों की कुंठित मानसिकता व नारी को दूसरे दर्जे का मानने की बात दिखाई देती है। सुनंदा का पति नवल मोहन अपनी पत्नी को मान सम्मान नहीं देता है। सुनंदा अपना पत्नीधर्म निभाती रहती है, लेकिन जब नवल की मानसिकता नहीं बदलती है तो सुनंदा भी गुलामों जैसा जीवन जीना नहीं चाहती । वह अपनी इच्छा के अनुसार निर्णय लेती है। क्योंकि सामाजिक रूप से दोनों स्वतंत्र होते हैं।

'कर्क रेखा' उपन्यास में शशिप्रभाजी ने समलैंगिक संबंधों की बात को उजागर किया है। उपन्यास का नायक अपनी पत्नी से खुश ना होकर अन्य पुरुष से खुश रहता है। पति-पत्नी में हमेशा अनबन होती रहती है । यह अनबन बच्चा पैदा होने के बाद भी होती रहती है । इस उपन्यास में वैवाहिक स्थिति व नारी की मनोवेदना का मार्मिक चित्रण

मिलता है। किसी भी रचनाकार के लिए हर तरह के विषय पर लिखने से उसके लेखन में गंभीरता आ जाती है। शशिप्रभाजी का चर्चित उपन्यास है 'सिद्धियाँ' इसमें समाज की कुप्रथा से लड़कियों पर क्या कुप्रभाव पड़ता है ? वह कितनी प्रताड़ित होती है यह दर्शाया गया है। इसमें मनिषी नाम का पात्र है ,जिसका बाल विवाह होता है। यहाँ एक नारी की मानसिकता व दुर्दशा का चित्रण है। 'सिद्धियाँ' उपन्यास में नारी चेतना की आवाज उठाई गई है।

'विरान रास्ते और झरना' इस उपन्यास में नारी के प्रति संयुक्त परिवार की मानसिकता को दर्शाया गया है। इसमें नायिका अचला है जो कि एक संयुक्त परिवार में रहती है। इस उपन्यास में परिवार के सदस्य जैसे माँ, चाचा आदि की संकीर्ण मानसिकता को उद्घाटित किया गया है , जो कि समाज के ही अभिन्न अंग हैं। 'कोडवर्ड' उपन्यास की नायिका मीना है जिसके के माध्यम से शशिप्रभाजी ने समाज की आत्मनिर्भर बनने वाली लड़कियों के लिए आदर्श चरित्र का निर्माण किया है। मीना की अपनी शादी को लेकर कई इच्छाएँ हैं। जिसे वह पूरा करना चाहती है और करती भी है। वह एक शिक्षित युवक से शादी करती है। मीना का चरित्र समाज की लड़कियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। 'नार्वे' उपन्यास में लेखिका ने स्त्री चेतना को प्रमुखता दी है। इसमें नायिका मालती पुरुष की हवस का शिकार हो जाती है और वह गर्भवती हो जाती है। परिवार से तिरस्कार मिलने पर मालती को पुरुष जाति से नफरत हो जाती है। इस प्रकार उपन्यास में लेखिका ने नारी पीड़ा को प्रमुखता दी है और समाज से लड़ने का हौसला भी दिया है।

2.3.7 चंद्रकांता

चंद्रकांताजी का जन्म जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में हुआ था। हिंदी साहित्य में अपना अमूल्य योगदान उन्हों ने उपन्यास व कहानी लेखन में दिया है। अन्य लेखिकाओं की तुलना में चंद्रकांताजी ने अधिक मात्रा में रचनाएँ की है।

चंद्रकांताजी का उपन्यास है 'अर्थांतर' इसमें नारी की पीड़ा,प्रताड़ना व मनोदशा का चित्रण मिलता है। इसमें नायिका कम्मो है। जो अपने पति को भटकने से रोकती है परंतु पति उसका मान-सम्मान नहीं करता तो वह भी अपनी स्वतंत्रता का परिचय देती है। और पितृसत्ता के मापदंड को न मानकर आधुनिक सोचवाली नारी की मार्ग पर चलती है। उनका अगला उपन्यास है 'अंतिम साक्ष्य' अंतिम इसकी नायिका मीना है। लेखिका ने मीना के माध्यम से संयुक्त परिवार के विघटन की त्रासदी को दिखाया है। साथ ही नारी के ममता , प्रेम व त्याग को प्रदर्शित किया गया है । इसमें सुरेश भारतीय फौज में तथा छोटा भाई घर परिवार की देखभाल करता है। मीना के माध्यम से लेखिका ने नारी के गुणों की विवेचना की है।

चंद्रकांता का प्रसिद्ध उपन्यास 'अपने-अपने कोणार्क' में लेखिका ने नारी की पीड़ा के साथ-साथ मनुष्य की स्वार्थीवृत्ति को भी अंकित किया है। इसमें मुख्य पात्र 'कुनी' है जो पेशे से अध्यापिका है। जो कि आधुनिक नारी का प्रतीक है। वह अपने परिवार की जिम्मेदारी को निभाती है। उसके परिवार में माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन सब हैं। एक नारी का संघर्ष इस उपन्यास में दिखाया गया है। परिवार व परिवार के बाहर स्वार्थी तत्वों से वह लड़ती है। चंद्रकांताजी का अगला उपन्यास है 'बाकी सब खैरियत' है। इसमें मनुष्य की स्वार्थपरक प्रवृत्ति को दिखाया गया है। अर्थ के लिए वर्तमान समय में सभी सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए सोचते हैं। आज की युवा पीढ़ी भी विदेशी संस्कृति का अंधानुकरण करती जा रही है। जिसके कारण मानवीय गुणों का पतन होता जा रहा है। लेखिका ने इस उपन्यास में सभी मूल्यों के पतन पर अपनी चिंता व्यक्त की है। इसमें पारुल, निम्मी ,

,स्मृता इला आदि पात्र हैं। 'कथा सतीसार' उपन्यास में चंद्रकांताजी ने कश्मीर की समस्या को उठाया है। कश्मीर से विस्थापित हुए कश्मीरी पंडितों की आवाज को उठाया गया है। 'कथा सतीसार' में लेखिका ने बताया है कि भारत-पाक विभाजन के बाद जम्मू कश्मीर के हालात बदल गए हैं। जिसके साथ वहाँ रहने वाले लोगों का जीवन भी बदल गया है। आतंकवाद के कारण कश्मीर के हालात ठीक नहीं है। कश्मीर का दर्द लेखिका ने व्यक्त किया है। इस उपन्यास में चंद्रकांताजी ने तीन पीढ़ियों की कथा को कहा है। जिससे जिससे कश्मीर के हालात का क्रमवार पता चलता है। देविका, राज्ञा , सारिका, प्रेम, विजय,इशा , अर्जुन आदि वर्तमान पीढ़ी के पात्र हैं। लेखिका भी कश्मीर की ही मूल निवासी है अतः नारी का दर्द व कश्मीर के हालात पर इनका लेखन निश्चय ही यथार्थ के ज्यादा नजदीक होगा ऐसा राजेंद्र यादव जी का भी मानना है।" जिस प्रकार एक दलित को जन्म और जाति के अपमान से निरंतर गुजरना पड़ता है उसी तरह न जाने कितनी यातनाएँ हैं जिन्हें सभी स्त्रीयाँ भोगती हैं। मासिकधर्म, प्रजनन, बलात्कार, परनिर्भरता जैसे ना जाने कितने अनुभव हैं जिन्हें स्त्री के सिवा कोई नहीं जानता।"[७]

2.3.8 नाशिरा शर्मा -

वर्तमान काल में हिंदी साहित्य गद्य में नासिरा शर्मा का नाम बहुत प्रसिद्ध है। इसके पीछे उनका सशक्त लेखन है। समाज में व्याप्त विभिन्न विषयों को इन्होंने लेखन का आधार बनाया है।

इनके उपन्यासों को प्रसिद्धि प्राप्त है। नासिरा शर्माजी का उपन्यास है 'जिंदा मुहावरे' इसमें भारत-पाक विभाजन और उसमें उत्पन्न तनाव की परिस्थिति को विषय बनाया है। जिसमें मुस्लिम धर्म के लोगों पर होने वाले अत्याचार को दिखाया गया है। इसमें निजाम से मिलने पाकिस्तान से रहीबा आता है। इसकी खबर जब शासन-प्रशासन

को पड़ती है तो उसके घर पुलिस आकर प्रताड़ित करती है। इस प्रताड़ना को वह सहन नहीं कर पाता और आत्महत्या कर लेता है। इस उपन्यास में लेखिका ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए मनुष्य के जीवन के विविध पहलूओं को उद्घाटित किया है। 'सात नदियाँ एक समुन्दर' एक नायिका प्रधान उपन्यास है। इसकी नायिका पितृसत्ता की पैरवी नहीं करती बल्कि रूढ़ियों को तोड़ती दिखाई देती है। सूसन का पति किसी अन्य महिला के साथ संबंध रखता है तो सूसन उसे छोड़कर दूसरा विवाह कर लेती है। सूसन का चरित्र नासिराजी ने आधुनिक समय की लड़कियों और नारियों के लिए आदर्श स्वरूप बनाया है। जो कि पितृसत्ता की जंजीरों को तोड़कर अपनी इच्छानुसार निर्णय लेती है। नासिराजी ने नारी चेतना की विवेचना 'सात नदियाँ एक समुन्दर' उपन्यास में की है। 'शाल्मली' इनका बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें नासिरा जी ने धर्म के आधार पर स्त्री पुरुष के मनोभावों को चित्रित किया है। सनातन धर्म तथा आधुनिक समय में पति-पत्नी के रिश्तो की विवेचना की है। शाल्मली का पति है नरेश, जो उसे प्रतिबंधित रखना चाहता है। शाल्मली कामकाजी महिला है और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। परंतु पुरुषवादी सोच के वशीभूत पति उसके पैसों को अपने कब्जे में रखना चाहता है। उस पर कई तरीके के प्रतिबंध लगाता है। उस के साथ वह कठोर शासक की तरह व्यवहार करता है। अतः 'शाल्मली'उपन्यास समाज की आम समस्याओं को और नारी के अधिकारो को प्रतिबंधित करने के निर्णय को चुनौती देता है। नासिरा शर्मा स्त्री चेतना की सशक्त पक्षधर है। हिंदू मुस्लिम की विभिन्न समस्याओं के साथ-साथ उनके रीति-रिवाज आदि पर प्रकाश डालने का भी उन्होंने प्रयास किया है। इसलिए महिला रचनाकारों की रचनाएँ चाहे वह किसी भी विषय पर हो वह विषयानुकूल व यथार्थपरक होती है। भले ही स्त्रियों की लेखन पीढ़ी बाद में आई हो परंतु वे गम्भीर लेखन में पुरुषों से कमजोर नहीं है। और यदि चर्चा स्त्री चेतना या स्त्री के मनोभावों की हो तो नारी की संवेदना नारी ही यथार्थ ढंग से प्रस्तुत कर सकती है। इस संबंध में डॉखे .मसिंह

डहेरिया ने कहा है कि " निष्कर्ष रूप में हमें ज्ञात होता है कि महिला उपन्यासकारों की संवेदनाएँ अत्याधिक यथार्थ परक है। इनकी रागात्मक संवेदना उनके अनुभव का परिणाम होने के कारण अत्यधिक हृदयस्पर्शी होती है तो सुखात्मक व दुखात्मक संवेदनाओं में भी जीवन के विविध रूपों के चित्रों द्वारा प्रभावोत्पादकता समाहित रहती है। महिलाओं की संवेदनाओं में राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन से जुड़ी संवेदनाएँ भी यथार्थपरक होकर उकेरी गई हैं।"[८]

पुरुष व महिला लेखन में भेद करना मुश्किल है क्योंकि महिला लेखिकाएँ भी पूर्ण गंभीरता के साथ लेखन कर रही हैं। यदि स्त्री विमर्श पर लेखन की बात करें तो निश्चय ही स्त्री लेखिकाओं की संवेदना अधिक यथार्थपरक होती है। डॉ. नीरजा माधव की रचनाओं में भी समकालीन लेखिकाओं के समान मानवता के साथ-साथ मानवीय संवेदना के प्रतिबिंब परिलक्षित होते हैं। सब महिला रचनाकारों में जिन विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है उन्हीं विषयों पर डॉ. नीरजा माधव ने भी अपने नजरिए से लेखन कार्य किया है। लेखिका ने नारी के हर पक्ष का चित्रण अपने कथा साहित्य में किया है। नारी विमर्श को मुद्दे पर डॉ नीरजा माधवजी ने अपने नारी पात्रों को पितृसत्ता की गलत नीतियों का प्रतिकार करते हुए दिखाया है और साथ-साथ सामंजस्य भी बनाए रखा है। उन्होंने पुरुष -नारी की प्रतियोगिता को कम महत्व दिया है। उनके पुरुष पात्र भी नारी के साथ सहभाव रखते हुए दिखाई देते हैं। नीरजाजी से पूर्व व वर्तमान में कई लेखिकाएँ हैं जिन्होंने लेखन में देहवाद, अश्लीलता तथा वस्तु के रूप में भी स्त्री को दिखाने का प्रयास किया है। परंतु निरजाजी के साहित्य में ऐसा नहीं है वह अपने सामान्य पात्रों के माध्यम से स्त्री चेतना की आवाज को उठाती है। उन्होंने अपने रचना साहित्य में उन विषयों को भी उठाया है जिनमें अभी तक स्त्री लेखन नहीं हुआ है। हिंदी साहित्य के इतिहास में जिन महिलाओं को पूर्व से इतिहास में नहीं शामिल किया है उनके साथ न्याय करने के लिए 'हिंदी साहित्य का ओझल नारी

इतिहास' नामक पुस्तक लिखी है। हिंदी साहित्य आज भी कई विषयों से अनभिज्ञ है इन विषयों पर भी निरजाजी का लेखन पूर्ण उपयोगी साबित हो रहा है।

नीरजा जी ने अपने उपन्यासों में थर्ड जेंडर, विभाजन की त्रासदी , नारीकी आत्मनिर्भरता ,कोमलता ,ममता आदि सभी गुणों के साथ-साथ नारी के अस्तित्व व अधिकारों की आवाज पुरजोर तरीके से उठाने का प्रयास किया है। इनकी सभी रचनाओं में स्त्री पुरुष में प्रतिरोध नहीं दिखाई देता बल्कि सामंजस्य दिखता है। अतः वर्तमान सदी की लेखिकाओं में निरजाजी का स्थान महत्वपूर्ण है। इन्हीं गुणों के कारण लेखिका महिला लेखन परम्परा को सशक्त तरीके से आगे बढ़ाने में सक्षम दिखाई देती है। साथ ही निरजाजी उनके साहित्य में वर्तमान समय के सभी विषयों पर सार्थक लेखन कर रही हैं ।

सन्दर्भ

1. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यमवर्ग, अनिल प्रभाकर, पृष्ठ. 54
2. वही, पृष्ठ. 14
3. वही, पृष्ठ. 14-15
4. वही, पृष्ठ.15
5. वही, पृष्ठ.16
6. वही,पृष्ठ.15
7. वही,पृष्ठ.18-19
8. वही, पृष्ठ.16
9. वही, पृष्ठ.17
10. वही, पृष्ठ. 17
11. वही.पृष्ठ , 29
12. नीरजा माधव - सृजन के आयाम, डॉ. बृजबाला, पृष्ठ. 13
13. लिखते हुए शोकगीत , डॉ नीरजा माधव, पृष्ठ. 68
14. डॉ नीरजा माधव, चिटके आकाश का सूरज, पृष्ठ. 6
15. नीरजा माधव- सृजन के आयाम, पृष्ठ. 61
16. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्ग , डॉ. अनिल कुमार कांबले, पृष्ठ. 25
17. नीरजा माधव की कहानियों में, डॉ अनिल प्रभाकर कांबले ,पृष्ठ 33 .